
कृषि विज्ञान केन्द्र,रायसेन
जीवामृत
बीजामृत


उर्द- PU-35
अवधि-70-75 दिन
उत्पा.10-12 क्वि/






Advance+
GREENSYSTEM
GREENSYSTEM


कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)
स्थापना वर्ष: 2004
संस्थान: दीनदयाल कृषि विकास एवं अनुसंधान समिति (डीकेवास), भोपाल
विश्वविद्यालय: जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र)
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-IX, जबलपुर (म.प्र)
उद्देश्य
कृषक एवं महिला कृषको के लिये प्रशिक्षण का आयोजन।
ग्रामीण युवाओं के लिये प्रशिक्षण का आयोजन।
कृषि विस्तार अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण का आयोजन।
महत्वपूर्ण गतिविधियां
प्रक्षेत्रीय परीक्षण (OFT) का आयोजन।
अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (FLD) का आयोजन।
क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन तिलहन का आयोजन।
क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन दलहन का आयोजन।
उन्नत बीज उत्पादन कार्यक्रम व कृषकों को बीज की उपलब्धता।
उन्नत पौध उत्पादन कार्यक्रम व कृषकों को पौध की उपलब्धता।
उन्नत फलदार पौध उत्पादन एवं कृषकों को पौध की उपलब्धता।
मृदा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन एवं मृदा स्वास्थ्य परीक्षण।
प्राकृतिक खेती जागरूकता, प्रशिक्षण एवं फसल प्रदर्शन।
कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम।
कृषि आदान विक्रेताओं के लिये देसी (DAESI) डिप्लोमा कार्यक्रम।
कृषि संकाय के नवयुवकों के लिये एग्री क्लीनिक एवं एग्री बिजनेस
कृषकों को लाईव वेबकास्ट।
प्रसार गतिविधियां
कृषक चर्चा
कृषक गोष्ठी
सामूहिक चर्चा
कृषि मेला
कृषि प्रदर्शनी
फसल दिवस
फसल निरीक्षण
रेडियो वार्ता
दूरदर्शन वार्ता
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)




सेब
अन्ना








QUALITY SEEDS




समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल
रसोई
Kitchen
कम्प्यूटर कक्ष
Computer Room
KEEP OUT OF SHOES
नैनो यूरिया प्लस (तरल)
नैनो यूरिया प्लस (तरल) पौधों को नाइट्रोजन प्रदान करने का उत्तम स्रोत है। पौधों की अच्छी बढ़वार एवं विकास में नाइट्रोजन अहम भूमिका निभाता है। नैनो यूरिया (तरल) विश्व में विकसित पहला पेटेंटेड नैनो उर्वरक है जिसे इफको नैनो बायो टेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर (एनबीआरसी) कलोल गुजरात द्वारा स्वदेशी तकनीकी द्वारा विकसित किया गया है। यूरिया जैसे पारंपरिक नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग में कटौती नैनो यूरिया द्वारा की जा सकती है।
प्रमुख विशेषताएँ
नैनो यूरिया में भार के आधार पर नाइट्रोजन की कुल मात्रा 20 प्रतिशत है।
नैनो यूरिया में मौजूद नाइट्रोजन के कणों का आकार 20-50 नैनोमीटर है।
नैनो यूरिया में मौजूद नाइट्रोजन पौधों को सुलभ रूप में मिलती है।
प्रयोग दर एवं विधि
नैनो यूरिया प्लस की 4 मिली. मात्रा एक लीटर पानी में घोलकर फसल पर पत्तीय छिड़काव करें।
पत्तीय छिड़काव हेतु 125 लीटर प्रति एकड़ पानी की आवश्यकता होती है।
पहला छिड़काव कल्ले / शाखाएँ निकलने के समय (बुवाई के 25-30 दिन बाद)।
दूसरा छिड़काव पहले छिड़काव के 20 दिन बाद।
NANO UREA PLUS
कृषि विज्ञान केंद्र, टो



अंश प्रभात www. anshprabhat.com आंचलिक

कलेक्टर रोहित सिसोनिया ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया निरीक्षण, किसानों से किया सीधा संवाद

रायसेन। कलेक्टर रोहित सिसोनिया ने कृषि विज्ञान केंद्र रायसेन का भ्रमण कर विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन किया तथा कृषि वैज्ञानिकों और जिले के किसानों से चर्चा कर खेती-किसानी की गतिविधियों की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने किसानों की आय बढ़ाने के लिए परंपरागत खेती के साथ आधुनिक तकनीक, प्राकृतिक खेती और समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने पर विशेष जोर दिया।



भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने केंद्र में केंचुआ खाद उत्पादन इकाई, पॉलीहाउस में गुलदाउदी एवं ब्रोमैटो, क्रॉप कैफेटेरिया में चिया सीड, मस्क दाना और अश्वगंधा की फसलों का अवलोकन किया। साथ ही प्राकृतिक खेती इकाई में जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत निर्माण की प्रक्रिया और नरवाई प्रबंधन के लिए उपयोगी सुपर सीडर व जीरो टिलेज मशीन की जानकारी प्राप्त की। कलेक्टर ने ग्राम चंदौरा, भानपुरगढ़ी, कढ़ैया, खंडेरा, बड़ौदा, चांदोनीगढ़ी एवं बाबलिया इमलिया से प्रशिक्षण लेने तथा मसूर प्रदर्शन के लिए बीज प्राप्त करने आए किसानों से भी संवाद किया। किसानों ने खाद बुकिंग और बिजली संबंधी समस्याएं बताईं। इस पर कलेक्टर ने व्हाट्सएप के माध्यम से खाद बुकिंग की प्रक्रिया समझाने तथा किसानों को आ रही परेशानियों का अधिकारियों से तत्काल समाधान कराने के निर्देश दिए।

बिजली विभाग से संबंधित शिकायतों के निराकरण के लिए भी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से किसानों को दिए जा रहे प्रशिक्षण, मृदा परीक्षण, कीट एवं रोग प्रबंधन, विभिन्न कृषि परियोजनाओं तथा व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से किसानों तक पहुंचाई जा रही जानकारियों और सुविधाओं की जानकारी ली। कलेक्टर ने जिले में किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से समन्वित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने अदरक, हल्दी, लहसुन, धनिया, चिया सीड एवं अश्वगंधा जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती, थाई अमरूद, एप्पल बेर एवं सीताफल के फलोद्यान विकसित करने तथा ड्रिप और मल्चिंग तकनीक से सब्जी उत्पादन को प्रोत्साहित करने के संबंध में कृषि अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों से विस्तार से चर्चा की। इसके साथ ही दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए सेक्स सॉर्टेड सीमन के माध्यम से कृत्रिम गर्भाधान और पशुओं की नस्ल सुधार पर भी विचार-विमर्श किया।

कलेक्टर ने जिले में उर्वरकों एवं कीटनाशकों के असंतुलित उपयोग पर चिंता जताते हुए प्रदर्शन और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को संतुलित मात्रा में उर्वरकों के उपयोग के लिए प्रेरित करने की बात कही। उन्होंने कहा कि संतुलित खाद एवं कीटनाशक उपयोग से खेती की लागत कम करने के साथ मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने में मदद मिलेगी। साथ ही जिले के सभी विकासखंडों में क्लस्टर बनाकर प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया भ्रमण

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसेन. कृषि विज्ञान केंद्र का निरीक्षण करने पहुंचे कलेक्टर रोहित सिसोनिया ने विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन किया। उन्होंने केंचुआ खाद उत्पादन, पॉलीहाउस में गुलदाउदी, चिया सीड, अश्वगंधा, प्राकृतिक खेती में जीवामृत-बीजामृत



निर्माण तथा नरवाई प्रबंधन के लिए सुपर सीडर और जीरो टिलेज मशीन की जानकारी ली। इस दौरान कलेक्टर ने प्रशिक्षण और मसूर प्रदर्शन बीज लेने पहुंचे विभिन्न गांवों के किसानों से चर्चा की। उन्होंने खाद की व्हाट्सएप से बुकिंग में आ रही समस्याओं का समाधान कराने तथा बिजली संबंधी शिकायतों का तत्काल निराकरण करने के निर्देश अधिकारियों को दिए।

8:32 9.20 KB/s 63%
paper.rajexpress.com

साथ रहने का साहस और सलीका
राज एक्सप्रेस

किसानों के बीच जमीन पर बैठकर कलेक्टर ने की किसानी पर चर्चा

कृषि विज्ञान केन्द्र नकतरा का भ्रमण कर नर्सरी का किया अवलोकन

● रायसेन / राज न्यूज नेटवर्क



कलेक्टर रोहित सिसोनिया ने ग्राम नकतरा स्थित कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन का भ्रमण कर विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों एवं नर्सरी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने किसानों के बीच जमीन पर बैठकर खेती-किसानी से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की और उनकी समस्याएं एवं सुझाव सुने। कलेक्टर का सहज और आत्मीय व्यवहार देखकर किसान भी प्रसन्न नजर आए और उन्होंने खुलकर अपनी बात रखी।

इस दौरान कलेक्टर ने केंचुआ खाद उत्पादन इकाई, पॉलीहाउस में गुलदाउदी एवं ब्रोमैटो, क्रॉप कैफेटेरिया में चिया सीड, मस्कदाना और अश्वगंधा की फसलों, प्राकृतिक खेती इकाई में जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत की तैयारियों का अवलोकन किया। साथ ही नरवाई प्रबंधन के लिए उपयोग किए जा रहे सुपर सीडर एवं जीरो टिलेज मशीन जैसे आधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी ली। उन्होंने विभिन्न फसलों की नर्सरी, उनकी किस्मों और तैयार करने की तकनीक के संबंध में भी वैज्ञानिकों से चर्चा की। इस अवसर पर ग्राम चंदौरा, भानपुरगढ़ी, कढ़ैया, खंडेरा, बड़ौदा, चांदोनीगढ़ी एवं बाबलिया इमलिया से आए किसानों से भी संवाद किया। कलेक्टर ने किसानों से खेती में अपनाई जा रही तकनीकों, उर्वरकों के उपयोग, उत्पादन बढ़ाने के प्रयासों और कृषि संबंधी समस्याओं की जानकारी ली। उन्होंने खाद की बुकिंग के लिए व्हाट्सएप सुविधा के संबंध में किसानों को जानकारी देने तथा इसमें आने वाली समस्याओं का निराकरण कराने के निर्देश अधिकारियों को दिए।

पशुओं की नस्ल सुधार जैसे विषयों पर चर्चा

कलेक्टर ने जिले में किसानों की आय बढ़ाने के लिए परंपरागत खेती के साथ समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने अदरक, हल्दी, लहसुन, धनिया, चिया सीड एवं अश्वगंधा जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती को प्रोत्साहित करने की बात कही। इसके अलावा थाई अमरूद, एप्पल बेर एवं सीताफल के फलोद्यान, ड्रिप और मल्चिंग पद्धति से सब्जी उत्पादन तथा दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए सेक्स सॉर्टेड सीमन से कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से पशुओं की नस्ल सुधार जैसे विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की जिले में उर्वरकों एवं कीटनाशकों के असंतुलित उपयोग को देखते हुए कलेक्टर ने प्रदर्शन और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर किसानों को संतुलित मात्रा में उर्वरकों के उपयोग के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इससे खेती की लागत कम करने में मदद मिलेगी। साथ ही सभी विकासखंडों में क्लस्टर बनाकर प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए।

About Us | Create your own ad | Advertise with us |
Terms of Use and Grievance Redressal policy | Privacy policy |
Feedback | Sitemap |

कलेक्टर ने किसानों से किया सीधा संवाद, समस्याओं को जाना

स्टार समाचार | रायसेन

कलेक्टर रोहित सिसोनिया ने कृषि विज्ञान केंद्र रायसेन का भ्रमण कर विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन किया तथा कृषि वैज्ञानिकों और जिले के किसानों से चर्चा कर खेती-किसानी की गतिविधियों की जानकारी ली।

इस दौरान उन्होंने किसानों की आय बढ़ाने के लिए परंपरागत खेती के साथ आधुनिक तकनीक, प्राकृतिक खेती और समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने पर विशेष जोर दिया। भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने केंद्र में केंचुआ खाद उत्पादन इकाई, पॉलीहाउस में गुलदाउदी एवं ब्रोमैटो, क्रॉप कैफेटेरिया में चिया सीड, मस्क दाना और अश्वगंधा की फसलों का अवलोकन किया। साथ ही प्राकृतिक खेती इकाई में जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत निर्माण की प्रक्रिया और नरवाई प्रबंधन के लिए उपयोगी सुपर सीडर व जीरो टिलेज मशीन की जानकारी प्राप्त की।

कलेक्टर ने ग्राम चंदौरा, भानपुरगढ़ी, कढ़ैया, खंडेरा, बड़ौदा, चांदोनीगढ़ी एवं बाबलिया इमलिया से प्रशिक्षण लेने तथा मसूर प्रदर्शन के लिए बीज प्राप्त करने आए किसानों से भी संवाद किया।

किसानों ने इस दौरान उन्हें खाद बुकिंग और बिजली संबंधी समस्याएं बताईं। इस पर कलेक्टर ने व्हाट्सएप के माध्यम से खाद बुकिंग की प्रक्रिया समझाने तथा किसानों को आ रही परेशानियों का अधिकारियों से तत्काल समाधान कराने के निर्देश दिए।

आज की प्रेरणा

स्वतंत्रता के नियमों को स्वीकार करने के बाद ही आपको स्वतंत्र कहलाने का अधिकार है।

ओम शांति...
ब्रह्माकुमारीज

एक नई सोच

युग प्रदेश

भोपाल, नर्मदापुरम एवं सागर से एक साथ प्रकाशित

आर.एन.आई नं. MPHIN/2013/50124

संपादक : भरत अर्जुन मेघानी | वर्ष : 14 • अंक : 186 | भोपाल, गुरुवार 5 नवंबर 2026 | पृष्ठ : 08 • मूल्य : 1.50 रुपए | www.yugpradesh.com



कृषि की नई तकनीकों से बढ़ेगी किसानों की आय, कलेक्टर ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया भ्रमण

समन्वित कृषि प्रणाली, प्राकृतिक खेती और उच्च मूल्य वाली फसलों को बढ़ावा देने पर जोर, किसानों से किया सीधा संवाद, खाद बुकिंग और बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित निराकरण के दिए निर्देश

युग प्रदेश, राजगढ़

जिले में किसानों की आय बढ़ाने और खेती को अधिक लाभकारी बनाने के उद्देश्य से कलेक्टर रोहित सिसोदिया ने बुधवार को कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन का भ्रमण कर विभिन्न कृषि गतिविधियों एवं प्रदर्शन इकाइयों का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने आधुनिक कृषि तकनीकों, प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण और समन्वित कृषि प्रणाली को बढ़ावा देने पर जोर दिया। साथ ही कृषि वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से जिले में कृषि विकास की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की। भ्रमण के दौरान कलेक्टर ने केंचुआ खाद उत्पादन इकाई, पॉलीहाउस में गुलदाउदी एवं ग्रेबेरा की खेती, क्रॉप कैफेटेरिया में चिया सीड, मक्का दाना और अश्वगंधा की फसलों का अवलोकन किया। उन्होंने प्राकृतिक खेती इकाई में जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत तैयार करने की तकनीक की जानकारी ली। इसके अलावा नरवाई प्रबंधन के लिए उपयोगी सुपर सीडर और जीरो टिलेज मशीन का भी निरीक्षण किया।

किसानों से जमीन पर बैठकर किया संवाद, समस्याओं के निराकरण के निर्देश : कलेक्टर ने ग्राम चंदौरा, धानपुरगढ़ी, कढ़ैया, खंदेरा, बड़ौदा, चांदोनीगढ़ी और बाबलिया इमलिया से प्रशिक्षण एवं मसूर प्रदर्शन बीज लेने पहुंचे किसानों से सीधा संवाद किया। उन्होंने किसानों से खेती की मौजूदा स्थिति, खाद की उपलब्धता, बिजली और कृषि संबंधी समस्याओं की जानकारी ली। खाद की बुकिंग व्हाट्सएप के माध्यम से करने की प्रक्रिया समझाते हुए उसमें आ रही दिक्कतों का संबंधित अधिकारियों से समाधान कराने के निर्देश दिए। बिजली संबंधी शिकायतों को गंभीरता से सुनते हुए तत्काल निराकरण के निर्देश भी दिए।

अदरक, हल्दी, लहसुन और औषधीय फसलों की खेती को मिलेगा बढ़ावा



किसानों की आय में वृद्धि के लिए कलेक्टर ने परंपरागत खेती के साथ समन्वित कृषि प्रणाली अपनाने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने उच्च मूल्य वाली फसलों जैसे अदरक, हल्दी, लहसुन, धनिया, चिया सीड और अश्वगंधा की खेती को प्रोत्साहित करने की बात कही। इसके साथ ही बाई अमरूद, एप्पल बेर एवं सीताफल के फलदार बगीचे विकसित करने, ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग तकनीक से सब्जी उत्पादन बढ़ाने पर चर्चा की। पशुधन एवं दुग्ध उत्पादन को भी कृषि आय का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए सेक्स सॉर्टेड सीमन से कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से पशुओं की नस्ल सुधार पर चर्चा की गई।

कलेक्टर ने कृषि वैज्ञानिकों से किसानों को दिए जा रहे प्रशिक्षण, मृदा परीक्षण, कीट एवं रोग प्रबंधन, विभिन्न कृषि परियोजनाओं तथा व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से किसानों तक पहुंचाई जा रही तकनीकी जानकारियों और सुविधाओं की जानकारी ली।

संतुलित उर्वरक उपयोग और प्राकृतिक खेती पर रहेगा विशेष जोर : जिले में उर्वरकों एवं कीटनाशकों के असंतुलित उपयोग पर चिंता जताते हुए कलेक्टर ने किसानों को संतुलित मात्रा में खाद एवं कीटनाशकों का उपयोग करने के लिए जागरूक करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रदर्शन एवं जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को वैज्ञानिक खेती के प्रति प्रोत्साहित किया जाए, जिससे खेती की लागत कम हो और उत्पादन एवं मुनाफे में वृद्धि हो सके। जिले के सभी विकासखंडों में क्लस्टर बनाकर प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया। इस अवसर पर एसडीएम मनीष शर्मा, तहसीलदार भरत सिंह, उप संचालक कृषि केपी भगत, परियोजना संचालक आत्मा रवि आप्टवेणी, सहायक कृषि मंत्री शिवम रघुवंशी, सहायक संचालक उद्यानिकी नीलम पाटिल तथा कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. स्वप्निल दुबे सहित वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी, डॉ. मुकुल कुमार, रंजीत सिंह राघव, डॉ. ब्रह्मानंद शुक्ला, आलोक कुमार सूर्यवंशी, लक्ष्मी चक्रवर्ती, डॉ. अंशुमान गुप्ता, पंकज भार्गव एवं सुनील केवाशम उपस्थित रहे।